आरती कुंज बिहारी की गीतुंज बिहारी की गीत

आरती कुंज बिहारी की गीतुंज बिहारी की गीत

आरती कुंजबिहारी कीुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

रारी की ॥

आरती कुंजुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

रारी की ॥

गले में बैजंती मालांती माला,
बजावै मुरली मधुर बाला ।ाला ।
श्रवण में कुण्डल झलकालाण्डल झलकाला,
नंद केआनंद नंदलाला ।ं
दलाला ।
गगन सम अंग कांति काली
काली,
राधिका चमक रही आली ।
का चमक रही आली ।
लतन में ठाढ़े बनमालीनमाली
भ्रमर सी अलक,
कस्तूरी तिलकलक,
चंद्र सी झलकंद्र सी झलक,
ललित छवि श्यामा
श्यामा प्यारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

रारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की...॥ुंजबिहारी की...॥

कनकमय मोर मुकुट बिलसैट बिलसै,
देवता दरसन को तरसैं ।
गगन सों सुमन रासि बरसै ।रसै ।
बजे मुरचंग,
मधुर मिरदंग,

ग्वालिन संग

,

अतुल रति गोप कुमारी कीमारी की,

श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

रारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की...॥ुंजबिहारी की...॥

जहां ते प्रकट भई गंगा

ा,

सकल मन हारिणि श्री गंगा ।

ा ।

स्मरन ते होत मोह भंगाा

बसी शिव सीसिव सीस,

जटा केबीचीच,

हरै अघ कीच,

चरन छवि श्रीबनवारी की

नवारी की,

श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

रारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की...॥ुंजबिहारी की...॥

चमकती उज्ज्वल तट रेनूवल तट रेनू,

बज रही वृंदावन बेनू ।ेनू ।

चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू

ग्वाल धेनू

हंसत मृदु मंदं

द,

चांदनी चंदं

द,

कटत भव फंदंद,

टेर सुन दीन दुखारी की

खारी की,

श्री गिरिधर कृष्णमुरारी की ॥

रारी की ॥

॥ आरती कुंजबिहारी की...॥ुंजबिहारी की...॥

आरती कुंजबिहारी कीुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

रारी की ॥

आरती कुंजबिहारी कीुंजबिहारी की,
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

रारी की ॥